मालवा एक्सप्रेस रेलगाड़ी दुर्घटना

*99. **श्री राम नरेश यादव :** क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) हाल ही में ग्वालियर के निकट मालवा एक्सप्रेस के एक मालगाड़ी से टकरा जाने से हुई दुर्घटना में मरने वालों की संख्या कितनी थी और मृतकों के आश्रितों को कितनी-कितनी धनराशि दी गई ;

(ख) इस दुर्घटना के क्या कारण थे; और

(ग) भविष्य में इस प्रकार की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं और क्या ऐसे मामलों में विदेशी तकनीकियों को प्रयोग में लाए जाने की संभावना है?

रेल मंत्री (श्री सी० के० जाफर शरीफ) : (क) 24-11-1993 को बिड़ला नगर और राघरू स्टेशनों के बीच निकटवर्ती लाइन पर चाली अप मालगाड़ी के पटरी से उतरे हुए माल-डिब्बों के साथ 4067 डाउन मालवा एक्सप्रेस की टक्कर हो जाने के कारण 13 व्यक्तियों की जानें गईं।

जिन मृत व्यक्तियों की शिनाख्त हो गई थी उन के निकट संबंधियों को अनुग्रह राशि के रूप में 70,000 रु० का भुगतान किया गया था।

(ख) रेल संरक्षा आयुक्त, मध्य सर्किल, बम्बई इस दुर्घटना के कारणों की सांविधिक जांच कर रहे हैं।

(ग) ऐसी दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए किये जा रहे कुछ उपाय इस प्रकार हैं :-

(1) निकटवर्ती लाइन पर आ रही गाड़ी के ड्राइवर को इस तरह के खतरों की चेतावनी देने के लिए, सभी डीजल और बिजली रेल इंजनों पर फ्लशर लाइटों की व्यवस्था करना।

(2) गाड़ी कर्मी-दल को पलीते/तेज रोशनी वाले सिगनल मुहैया कराए जाते हैं, जिन्हें खतरे की हालत में जलाया जाता है ताकि पास आ रही गाड़ी के ड्राइवर को चेतावनी दी जा सके।

(3) गाड़ी कर्मीदल को पटाखा सिगनल भी मुहैया कराए जाते हैं। इन्हें पास आ रही गाड़ी का ध्यान आकर्षित करने के लिए, निकटवर्ती लाइन पर लगाया जा सकता है।

(4) परिचालनिक कोटियों के कर्मचारियों को गहन प्रशिक्षण दिया जाता है और उनके कार्यनिष्पादन पर बराबर नजर रखी जाती है।

(5) ड्राइविंग तकनीकों, चौकसी और सतर्कता के संबंध में ड्राइवरों की विशेष स्क्रीनिंग का कार्य शुरू किया गया है।

(6) मेल और एक्सप्रेस गाड़ी के ड्राइवरों की आवधिक मनोवैज्ञानिक जांच करना।

(7) चल स्टाक की जांच को सुदृढ़ करना और युक्तिसंगत बनाना।

कभी-कभी ऐसी दुर्घटनाएं इसलिए होती हैं क्योंकि निकटवर्ती लाइन पर गाड़ी के पटरी से उतरने के तुरंत बाद 'अवरुद्ध' लाइन पर गाड़ी आ जाती है और इस प्रकार पटरी से उतरी हुई गाड़ी के कर्मीदल के पास "अवरुद्ध" लाइन के संरक्षण के लिए कोई समय नहीं रह जाता।

विदेशी रेलों द्वारा उपयोग में लाई जा रही तकनीकों पर समय-समय पर विचार किया जाता है और जहां-कहीं वे हमारी प्रणाली के लिए उपयुक्त पायी जाती है, उन्हें अपना लिया जाता है, बशर्ते कि संसाधन उपलब्ध हों।